विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०४/०७/२०२० (बोर्ड बेस्ड क्वेश्चन)

पाठ:चतुर्थ: कल्पतरु: संग्रह वेतालपञ्चविंशति:

शब्दार्थ- हिमवान-हिमालय

सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्र:-(सर्वरत्नभूमि:+नगेन्द्र:)=सभी रत्नों की भूमि तथा पर्वतों का राजा

सानोरुपरि -(सानो:+उपरि)=चोटी के ऊपर

जीमूतकेतुरिति-जीमूतकेतु:+इति

गृहोद्याने -(गृह+उद्याने)=घर के उद्यान म

कुलक्रमागत: -वंशपरम्परा से प्राप्त

आराध्य -पूजा करके

तत्प्रसादात् -उनकी कृपा से

अस्ति हिमवान् नाम सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्र:।

अर्थ-सब रत्नों की भूमि पर्वतों का राजा हिमालय है।

#तस्य सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम् ।

अर्थ-उस पर्वत की चोटी पर कंचनपुर नामक नगर है।

#तत्र जीमूतकेतुरिति श्रीमान् विद्याधरपति: वसति स्म।

अर्थ -वहां विद्याधरपति जीमूतकेतु रहता था।

#तस्य गृहोद्याने कुलक्रमागत: कल्पतरु:स्थित:।

अर्थ -उसके गृहोद्यान में वंश परम्परा से प्राप्त कल्पवृक्ष लगा हुआ था।

#स राजा जीमूतकेतु: तं कल्पतरुम् आराध्य तत्प्रासादात् च बोधिसत्वांशसम्भवम् जीमूतवाहनम् नाम पुत्रं प्राप्नोत् ।

अर्थ-वह राजा जीमूतकेतु उस कल्पवृक्ष की पूजा करके तथा उसकी कृपा से बोधिसत्व के अंश से उत्पन्न जीमूतवाहन नामक पुत्र को प्राप्त किया ।